प्रकाशन की तिथि 01.03.2020

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 5.00

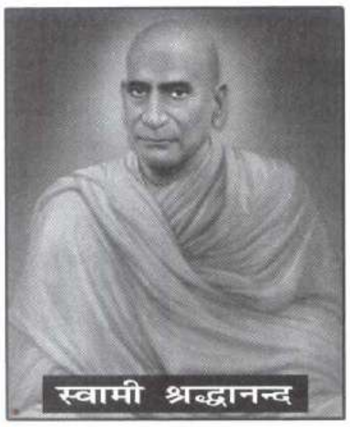

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 43 अंक 03

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रूपये
आजीवन शुल्क : 500 रूपये

मार्च 2020 विक्रम सम्वत् 2076 फाल्गुन-चैत्र

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता: श्री हरबंस लाल कोहली श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

भगत सिंह की शहादत नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत

सरदार भगत सिंह का नाम अमर शहीदों में सबसे प्रमुख रूप से लिया जाता है। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गांव (जो अभी पाकिस्तान में है) के एक देशभक्त सिख परिवार में हुआ था, जिसका अनुकूल प्रभाव उन पर पड़ा था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था।

यह एक सिख परिवार था जिसने आर्य समाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्य समाज व महर्षि दयानंद की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। भगत सिंह के जन्म के समय उनके पिता सरदार किशन सिंह एवं उनके दो चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह अंग्रेजों के खिलाफ होने के कारण जेल में बंद थे।

जिस दिन भगत सिंह पैदा हुए उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया। इस शुभ घड़ी के अवसर पर भगत सिंह के घर में खुशी और भी बढ़ गई थी। भगत सिंह के जन्म के बाद उनकी दादी ने उनका नाम भागो वाला रखा था। जिसका मतलब होता है अच्छे भाग्य वाला। बाद में उन्हें भगत सिंह कहा जाने लगा।

वह 14 वर्ष की आयु से ही पंजाब की क्रांतिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे। डी.ए.वी. स्कूल से उन्होंने नौवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1923 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें विवाह बंधन में बांधने की तैयारियां होने लगी तो वह लाहौर से भागकर कानपुर आ गए। फिर देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें कि पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया।

भगत सिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह युवकों के लिए हमेशा ही एक बहुत बड़ा आदर्श बना रहेगा। भगत सिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अंदाजा लगता है। उन्होंने भारतीय समाज में भाषा, जाति और धर्म के कारण आई दूरियों पर दुख व्यक्त किया था।

उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग पर किसी भारतीय के प्रहार को भी उसी सख्ती से सोचा जितना कि

किसी अंग्रेज के द्वारा किए गए अत्याचार को। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उग्र हो जाएगी, लेकिन जब तक वह जिंदा रहेंगे ऐसा नहीं हो पाएगा। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था।

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की।

काकोरी कांड में रामप्रसाद बिस्मिल सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजा से भगत सिंह इतने ज्यादा बेचैन हुए कि चंद्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

इसके बाद भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स को मारा। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने भी उनकी पूरी सहायता की। इसके बाद भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर अलीपुर रोड़ दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेंबली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके। बम फेंकने के बाद वहीं पर उन दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

इसके बाद लाहौर षडयंत्र के इस मुकदमें में भगत सिंह को और उनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव को 23 मार्च, 1931 को एक साथ फांसी पर लटका दिया गया। यह माना जाता है कि मृत्यु दंड के लिए 24 मार्च की सुबह ही तय थी, लेकिन लोगों के भय से डरी सरकार ने 23-24 मार्च की मध्यरात्रि ही इन वीरों की जीवनलीला समाप्त कर दी और रात के अंधेरे में ही सतलज के किनारे उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया। यह एक संयोग ही था कि जब उन्हें फांसी दी गई और उन्होंने संसार से विदा ली, उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 5 माह और 23 दिन थी और दिन भी था 23 मार्च। अपने फांसी से पहले भगत सिंह ने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा था, जिसमें कहा था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्धबंदी समझा जाए तथा फांसी देने के बजाए गोली से उड़ा दिया जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

भगत सिंह की शहादत से न केवल अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को गति मिली बल्कि नवयुवकों के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत बन गए। वह देश के समस्त शहीदों के सिरमौर बन गए। भारत और पाकिस्तान की जनता उन्हें आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानीसहित सारी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी। उनके जीवन पर आधारित कई हिन्दी फिल्में भी बनी हैं जिनमें- द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, शहीद, शहीद भगत सिंह आदि। आज भी सारा देश उनके बलिदान को बड़ी गंभीरता व सम्मान से याद करता है।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

23 मार्चः भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव शहीद दिवस

भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव भारत के वे सच्चे सपूत थे, जिन्होंने अपनी देशभक्ति और देशप्रेम को अपने प्राणों से भी अधिक महत्व दिया और मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर कर गए। 23 मार्च यानि, देश के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों को हंसते-हंसते न्यौछावर करने वाले तीन वीर सपूतों का शहीद दिवस। यह दिवस न केवल देश के प्रति सम्मान और हिंदुस्तानी होने व गौरव का अनुभव कराता है, बल्कि वीर सपूतों के बलिदान को भीगे मन से श्रद्धांजलि देता है।

उन अमर क्रांतिकारियों के बारे में आम मनुष्य की वैचारिक टिप्पणी का कोई अर्थ नहीं है। उनके उज्ज्वल चरित्रों को बस याद किया जा सकता है कि ऐसे मानव भी इस दुनिया में हुए हैं, जिनके आचरण किंवदंति हैं। भगतसिंह ने अपने अति संक्षिप्त जीवन में वैचारिक क्रांति की जो मशाल जलाई, उनके बाद अब किसी के लिए संभव न होगी।

आदमी को मारा जा सकता है उसके विचार को नहीं। बड़े साम्राज्यों का पतन हो जाता है लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं और बहरे हो चुके लोगों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज जरूरी है। बम फेंकने के बाद भगतसिंह द्वारा फेंके गए पर्चों में यह लिखा था।

भगतसिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून-खराबा न हो तथा अंग्रेजों तक उनकी आवाज पहुंचे। निर्धारित योजना के अनुसार भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय असेम्बली में एक खाली स्थान पर बम फेंका था। इसके बाद उन्होंने स्वयं गिरफ्तारी देकर अपना संदेश दुनिया के सामने रखा। उनकी गिरफ्तारी के बाद उन पर एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जेपी साण्डर्स की हत्या में भी शामिल होने के कारण देशद्रोह और हत्या का मुकदमा चला।

यह मुकदमा भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में लाहौर षडयंत्र के नाम से जाना जाता है। करीब 2 साल जेल प्रवास के दौरान भी भगतसिंह क्रांतिकारी गतिविधियों से भी जुड़े रहे और लेखन व अध्ययन भी जारी रखा। फांसी पर जाने से पहले तक भी वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे।

भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को हुआ था और 23 मार्च 1931 को शाम 7.23 पर भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फांसी दे दी गई।

शहीद सुखदेवः सुखदेव का जन्म 15 मई, 1907 को पंजाब को लायलपुर पाकिस्तान में हुआ। भगतसिंह और सुखदेव के परिवार लायलपुर में पास-पास ही रहने से इन दोनों वीरों में गहरी दोस्ती थी, साथ ही दोनों लाहौर नेशनल कॉलेज के छात्र थे। सांडर्स हत्याकांड में इन्होंने भगतसिंह तथा राजगुरु का साथ दिया था।

शहीद राजगुरुः 24 अगस्त, 1908 को पुणे जिले के खेड़ा में राजगुरु का जन्म हुआ। शिवाजी की छापामार शैली के प्रशंसक राजगुरु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से भी प्रभावित थे।

पुलिस की बर्बर पिटाई से लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए राजगुरु ने 19 दिसंबर, 1928 को भगत सिंह के साथ मिलकर लाहौर में अंग्रेज सहायक पुलिस अधीक्षक जेपी सांडर्स को गोली मार दी थी और खुद ही गिरफ्तार हो गए थे।

परीक्षा में आत्मविश्वास बनाए रखें

दुनिया में कई ऐसे सफल व्यक्ति हैं, जिन्होंने कभी स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की या जिन्हें कई कारणों से पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी किन्तु फिर भी जीवन में वे बहुत सफल रहे। कई ऐसे उच्च पदस्थ व्यक्ति मिलेंगे, जिन्होंने वह पद पहली बार में ही सफलता प्राप्त करके नहीं पाया या किसी परीक्षा में अनतुत्तीर्ण होने के बाद ही संभल पाये। इसलिए निराशावादी दृष्टिकोण से दूर रहें।

परीक्षा के दिनों में कॉलेज, विश्वविद्यालय में सारा वातावरण ही पढ़ाई का हो जाता है। जहां देखो पढ़ाई की बातें। ये बातें कुछ इस प्रकार की होती हैं। 'तूने कितना पढ़ लिया? हाय, मेरी तो अभी कई किताबें पूरी की पूरी बची हैं।' सच्ची कितने घंटे पढ़ती है तू? तुझे पता है न, सुमी डेली आठ घंटे नियम से पढ़ती है।'

ऐसी ही बातें आप भी अवश्य सुनती होंगी। लेकिन यह सोचकर परेशान न हो कि, हाय, अब क्या होगा? आपकी सखी ने तो इक्नॉमिक्स का पूरा कोर्स खत्म कर लिया और आपका काफी बचा है। हो सकता है कि आपने जो तैयारी की हो, वह आपकी सहेली ने न की हो। दूसरों की बातों को सुनकर तनावग्रस्त न हों।

पढ़ाई ऐसे करें:- जब भी पढ़ने बैठे हमेशा यह निश्चय कर बैठें कि आपको उस दिन कितना पढ़ना है? कौन सा पाठ खत्म करना है। उसे पूर्ण करने के पश्चात ही उठें। यह निश्चय करने की आदत या लक्ष्य निर्धारण आपको पढ़ने में बहुत अधिक प्रेरित करेगा। यह याद रखें कि निश्चय करते समय अपनी क्षमता का यथार्थ मूल्यांकन अवश्य कर लें।

अक्सर ही ऐसा होता है कि कोर्स दोहराते समय हम 'अरे! यह तो याद ही है' सोचकर पृष्ठ पलट देते हैं। दोहराने का यह तरीका पृष्ठ पलट देते हैं। दोहराने का यह तरीका ठीक नहीं हैं। एक पाठ याद करने के पश्चात किताब बंद कर मन ही मन स्मरण करें कि आपको कितना पाठ याद हो गया है? आपको फौरन ही आप कितना याद कर चुके हैं, पता चल जायेगा।

बीच-बीच में अपनी परीक्षा स्वयं लीजिए। जितना कोर्स आपको याद हो चुका है, उसमें से कुछ के प्रश्न लिखकर उनके उत्तर बगैर पुस्तक देखें लिखें। इससे आपको बहुत अच्छी तरह याद हो जायेगा और आपकी शब्दों की गलतियों में भी सुधार होगा तथा आत्मविश्वास बढ़ेगा।

कभी-कभी अपने मित्रों से और परिवार के सदस्यों से कहिये कि वे आपसे प्रश्न करें। मौखिक रूप से पूछे जाने पर आपके मस्तिष्क में उत्तर स्थायी रूप से बन जायेंगे।

रोज शाम को कुछ समय अपने मनोरंजन के लिए अवश्य निकालें। इससे आपके शरीर में नई स्फूर्ति आयेगी। साथ ही अपने आहार पर भी समुचित ध्यान दें क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन होता है। यदि आपका शारीरिक स्वास्थ्य ही ठीक नहीं है तो चाहकर भी आप पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पायेंगी।

व्यायाम अवश्य करें। व्यायाम से शरीर के रक्तसंचार में तेजी आती है। व्यायाम से एक लाभ यह भी होगा कि मस्तिष्क में जाने वाली ऑक्सीजन की मात्रा में बढ़ोत्तरी होगी और दिमाग की थकान दूर होगी।

सम्पादकीय

राष्ट्र के कर्णधार युवा

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

आँखों में भविष्य की कल्पनाएं, बाजुओं में नवीन रूधिर से भरी ऊर्जा, मुट्ठियों में काल के प्रवाह को रोक देने की क्षमता, तनी भृकुटि पर आक्रोश की खींची रेखाएँ, ओठों पर खेलती मोहक मुस्कान, मन में आकाश छूने वाली तरंगें, अनुभव विहीन मस्तिष्क में विश्वास पूरित ऊहा, कुछ गुन-गुनाहट, कुछ खिल-खिलाहट, कुछ तरंगे, कुछ उमंग, कुछ मोहक सपने, कुछ विद्वेष से भरी खीझ, इन्द्र धनुषी रंगों में खोयी डूबी कुछ कल्पनाएँ, कुछ दीवानगी भरे कदम, इन सबको मिलाकर एक शब्द में कहा जाए तो वह है-युवा अवस्था। मादकता से पूरित अलमस्त जवानी। ये जीवन का सबसे मूल्यवान क्षण है। शबनम की तरह खूबसूरत परन्तु तुहिन बिन्दु सा ही क्षणिक।

युवा शरीर में नवीन ऊर्जा शक्ति का स्त्रोत इठलाता रहता है, उसमं सदा नूतन बिजलियाँ कौंधती रहती है। इसीलिए युवा कदमों को रोक पाना या दिशा दे पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। युवाओं की फड़कती शक्ति को सही मार्ग पर लाकर ही देश के भवन की भित्ति को सुदृढ़ किया जा सकता है। युवा स्वर जहां मादक और मोहक होता है वहीं वह विध्वंसक और विनाशक भी होता है। युवा जहाँ अनुसरण करने वाला दीवाना होता है वहीं वह परम्पराओं और मर्यादाओं को तोड़ने वाला विद्रोही भी होता है।

आज का युवक, पथ-भ्रान्त, आत्म-ग्लानि से खीझता, तोड़ फोड़ और विध्वंस से दहकता, नशे की लतों में डूबता, जीवन की समस्याओं से भागता, जमाने भर से शिकायत करता, कुण्ठाओं से भरा, अनुशासन और शीलवृत्त को भंग करता नजर आ रहा है। आज वह एक दोराहे पर खड़ा है जहां उसे राह नजर नहीं आ रही है। अश्लीलता की आग में उसका मन और मस्तिष्क झुलस रहा है। तरह-तरह के दुर्व्यसनों से उसका नैतिक पतन हुआ जा रहा है। आज आवश्यकता है उसे नैतिकता, संयम, अनुशासन और कर्तव्य बोध कराया जाये। आज आवश्यकता है नव भात के निर्माण करने की। इसके लिए उन चरित्रवान् बलिदानी वीरों की आवश्यकता है जो अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए कह सकें 'वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम्'। हम तुझ पर बलिदान करने वाले हों। आन-बान-शान के प्रतीक, चरित्र के तप से प्रदीप्त, श्रम की बूंदों से अभिषिक्त। युवाओं से ही इस राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। हम विस्मृति के गर्त से अपना महान् संस्कृति को पुनजीर्वित करें। हम अपने ज्ञानी विज्ञानी ऋषि मुनियों की संस्कृति को जिसमें भौतिक सुख के साथ आध्यात्मिक आनन्द की संयुक्त धारा है, उस भागीरथी को पुनः प्रवाहित करें। आज भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अज्ञान, अन्ध परम्पराएँ, दुराचार, अभाव दानव फिर जाग उठा है। उससे इस देश को बचाना आज के युवा का ही कर्तव्य है। आज के युग में आय के साधन सीमित हैं। व्यय निरन्तर वृद्धि पर है। व्यक्ति अनुचित ढंग से धन की प्राप्ति में आचार भ्रष्ट हो जाता है। आज तन ढाँकने से अधिक ऊपरी दिखावे पर खर्च होता है। विलासिता और मादकता पर अधिक खर्च होता है। इसलिए युवाओं को ही सन्तोष और संयम सीखना पड़ेगा। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था- मेरे भारत के होनहार युवकों।

भारत का भविष्य ही तुम्हारा भविष्य है और इसके निर्माण का दायित्व तुम्हारे कन्धों पर है।

उठो! जागो!! अपने देशवासियों को जगाओ! सूर्योदय से पूर्व ही अपने कर्तव्य का निर्धारण कर लो और अपने कर्मपथ पर अग्रसर हो जाओ। एक क्षण भी वृथा मत गवाओ। यदि तुम आलस्य या प्रमाद में डूबे रहे तो सूर्य पश्चिम को चला जायेगा, तब तुमसे कुछ भी न हो सकेगा।

उठो! अतीत को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालो और साहस पूर्वक अपने पवित्र संकल्प से शक्तिशाली वर्तमान को उज्जवल भविष्य की दौड़ मैं नियोजित करो।

मेरे देश के भावी कर्णधारों! आगे बढ़ो। पुरानी अकर्मण्यता पर विजय प्राप्त करो, जहां परिवर्तन की आवश्यकता है वहां परिवर्तन करो और जहां गति की आवश्यकता है वहां गति लाओ। निर्बाध गति से लक्ष्य की ओर बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ, जब तक सफलता तुम्हारे चरण न चूम ले।

हमें अपने विगत के महान् आदर्शो के अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा। हम वर्तमान समय के कायरता युक्त विचारों को त्याग कर मातृभूमि के हित राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत आत्मविश्वास और समर्पण के भव्य-भावों को अपने श्वास प्रश्वास में बसाये हुए सच्चे जीवन्त युवक बनो।

हमारे आदर्श है वे पूर्व पीढ़ी के लोग जिन्होने देश की आजादी का युद्ध लड़ा था। वे भी युवक थे जिन्होंने गीत फांसी के फन्दों को देखकर मस्ती भरे गीत गाये थे। जिन्होंने राष्ट्रयज्ञ में अपने तन की समिधा जलायी थी। उन्होंने आजादी की पुरवा हवा हमारे लिए बहायी जिसमे हम सुखपूर्वक साँस ले सकें। मित्रों! आज फिर देश की एकता और अखण्डता पर चोट पड़ रही है। आज फिर भारत माता के शरीर पर घाव उकेरे जा रहे हैं। आर्य वीर देश की आजादी के लिए लड़ें। चाहे वह भगतसिंह थे या रामप्रसाद अथवा चन्द्रशेखर थे मदनलाल धींगरा, सुभाष चन्द्र बोस या अशफाकउल्ला। वह चाहे लाजपतराय थे या श्याम जी कृष्ण वर्मा वह चाहे दयानन्द थे या श्रद्धानन्द। आज उनके अनुयायियों को चाहिए कि वे राष्ट्रवादी युवकों का आह्वान करें। जो देश से साम्प्रदायिक आग को मिटायें, देश के गद्दरों को सजा दें जो भारत की शान्ति को दृढ़ करें। राष्ट्र की मुख्य धारा में सब को जोड़ सकें। वैसे भी युवा उम्र से नहीं होता। उपन्यास सम्राट् मुन्शी प्रेमचन्द के शब्दों में-युवक कौन है?

बुजुर्ग की पहचान बुद्धि है, उम्र नहीं। बूढ़े बेवकूफ भी होते हैं। उसी तरह जवानी की पहचान उम्र नहीं, कुछ और है। हम उसे जवान नहीं कहते, जिसकी उम्र 18 से 25 तक हो, जो सिर से पाँव तक फैशन में सजा हुआ, विलासिता का दास, जरूरतों का गुलाम, स्वार्थ के लिए गधे को बाप कहने को तैयार हो, वह जवान है न बूढ़ा, वह मृतक है, जिससे न जाति का उपकार हो सकता है न देश का भला। हम जवान उसे कहते हैं, जो बीस का हो या चारबीस का हो, पर हो हिम्मत का धनी, दिल का मर्द, आन पर अपनी मर जाये पर किसी का एहसान न ले, सिर कटा दे, झुकाये नहीं, जो कठिनाइयों से डरे नहीं, बाधाओं से बचे नहीं, बल्कि उनमें कूद पड़े। 6 महीने का सुगम मार्ग न चलकर 6 दिन का जान जोखिम का मार्ग पकड़े। नदी के किनारे नाव के इंतेजार में खड़ा न हो बल्कि उछलती लहरों पर सवार हो जाये।

शहीदे आजम् पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर -तुम्हें शत-शत नमन

-कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्ट उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

पुत्र शोक जिसने दशरथ को मरते देखा,
पुत्र शोक मानव की कोमलतम रेखा।
छोड़ सके न प्रताप भी जिस ममता को,
धन्य-धन्य ऐ लेखराम
तू जीत गया उस ममता को।।

गंभीर से गंभीर विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करते थे- पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी आर्य मुसाफिर के सम्बन्ध में एक संस्मरण बताते हैं कि एक बार कुछ विद्यार्थियों ने पूछा, ''मन का लक्षण क्या है?'' पं. जी का उत्तर ऐसा था कि पण्डित इन्द्र जी जीवनपर्यन्त उसे भूल न सके। पण्डित लेखराम जी ने उत्तर दिया, ''मन उल्लू का पट्ठा है। यदि इसे काबू में न रखो तो बड़े से बड़ा अनर्थ कर सकता है।'' सारे विद्यार्थी हंस पड़े। पण्डित लेखराम जी ने आगे कहा, ''मन को मन से लगाओ, मन को सुमन बनाओ। यह मन इधर-उधर घूमता है। सन्ध्या, भजन, जप में कम लगता है। मन की चंचलता तब तक दूर न होगी जब तक मन में दृढ़ता और शिव संकल्प नहीं होते। इसलिए वेदों में ईश्वर कृपा की प्रार्थना करते हुए प्रभु को पुकारा जाता है कि हे प्रभु मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।''

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

गम्भीर से गम्भीर विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करना पं. लेखराम जी का ही कमाल था।

प्रधान जी! मैं पहले पहुँच गया- आर्य समाज रोपड़ के वार्षिकोत्सव से जुड़ी एक हृदय स्पर्शी घटना यहां दी जा रही है। महात्मा मुंशी राम जी अपने छोटे पुत्र इन्द्र को लेकर रोपड़ के वार्षिकोत्सव में गये। ज्यों ही नाव किनारे पर पहुँची तो पं. लेखराम जी नाव से पहले उतर गये और महात्मा मुंशी राम जी से मजाक करते हुए कहा, ''प्रधान जी! देख लीजिए, मैं आपसे पहले यहां पहुंच गया। महात्मा जी ने सहज भाव से उत्तर दिया कि आपको तो पहले ही पहुँचना चाहिए क्योंकि आप तो आर्य मुसाफिर हैं।

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने लिखा है कि आर्य समाज के इन दोनों बलिदानियों का यह वार्तालाप भविष्यवाणियों से कैसा भरा हुआ था। दोनों एक ही पथ के पथिक थे और दोनों एक ही डगर से होकर इस संसार से विदा हुए। पं. लेखराम जी की गति तीव्र थी। वे शीघ्र-अति-शीघ्र मार्ग तय कर लेते थे। महात्मा मुंशी राम जी के स्वभाव में ठहराव था, इसलिए मार्ग पर देर तक चलते रहे। परन्तु दोनों मित्र बलिदान के द्वार से होकर विश्रान्ति स्थान पर पहुंचे। वीर लेखराम जी ने रोपड़ में जो

बात मजाक में कही थी कि मैं आपसे पहले पहुंच गया, वह भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई। दोनों मित्रों में सेवा, त्याग, आत्मोत्सर्ग और बलिदान की एक होड़ सी लगी थी। लेखराम इससे आगे निकल गये। मुंशीराम जी ने भी मित्रता पूरी-पूरी निभाई। वे भी एक के बाद दूसरी अग्नि परीक्षा देकर वीरगति पाकर पं. वीर लेखराम जी के साथ जा मिले।

त्याग की प्रतिमूर्ति- महात्मा मुंशी राम जी लिखते हैं, ''आर्य पथिक सभा से केवल वही मार्ग व्यय लिया करते थे जो उनका वास्तव में व्यय होता था, उससे ऊपर कभी नहीं लेते थे। इक्का गाड़ी और टांगे आदि का व्यय उस स्थिति में लेते थे, जहां सामान, बिस्तर आदि उठाकर पैदल नहीं पहुँच सकते थे।' एक बार सभा के कार्य से उन्हें कहीं भेजा गया किन्तु उन्होंने केवल एक तरफ का मार्ग व्यय बिल में पेश किया। पूछने पर पं. जी ने बताया कि वहां पर वह अपना निजी कार्य भी करने आये हैं। इसलिए एक तरफ का किराया बिल में दर्शाया गया है। ऐसे धर्म-परायण और ईमानदार प्रचारक कहां मिलते हैं'' महात्मा मुंशीराम जी उन्हें इसीलिए ''सत्त्वगुणी ब्राह्मण'' कहा करते थे। आज के प्रचारकों एवम् अन्य कर्मचारियों को लेखराम जी के जीवन से त्याग का यह गुण ग्रहण करना चाहिए।

सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करते थे- आर्य समाज के सिद्धान्तों के आगे कई बार बड़े-बड़े उपदेशक भी गिर जाते हैं किन्तु पं. जी के जीवन में ऐसा कोई अवसर नहीं आया कि उन्होंने आर्य सिद्धान्तों से समझौता किया हो। एक बार उन्हें नियोग की प्रथा समझ में नहीं आई, उन्होंने इसके पक्ष में मुँह नहीं खोला। जब एक बार नियोग का ज्ञान पा लिया तो इस विषय के सर्वोत्तम वक्ता बन गये एवम् इस विषय पर पुस्तक लिखकर इसका मण्डन भी किया।

अमृत का स्रोत केवल वेद- मार्च 1896 में आप पं. कृपा राम जी के साथ आर्य समाज अजमेर के उत्सव में सम्मिलित हुए। यह आपकी ऋषि दयानन्द की भूमि अजमेर की अन्तिम यात्रा थी। 'अमृत का स्रोत' विषय पर आपका बहुत प्रभावशाली भाषण हुआ। आपने युक्तियों व प्रमाणों से सिद्ध किया कि अमृत का स्रोत केवल प्रभु का नित्यज्ञान वेद ही हैं। जोधपुर के सर प्रताप सिंह जी के दो व्यक्ति विघ्न डालने आये थे। जब पं. जी व्याख्यान देने पहुँचे तो वहां जनसमूह ने करतल ध्वनि से आपका स्वागत किया। उन दोनों विघ्नकारों का साहस ऐसी स्थिति को देखकर टूट गया।

अद्‌भुत सूझ-बूझ के स्वामी- एक बार पंण्डित जी ने अपने परिवार के साथ जम्मू का रघुनाथ मन्दिर देखने गये। इस मन्दिर में बहुत सी मूर्तियां, कंकर, शंकर रखे हुए है। कहा जाता है कि इनकी संख्या 33 करोड़ है। संख्या की पड़ताल किसने की है? पं. जी ने पुजारी से पूछा, ''इन्हें भोग भी लगाते हो क्या?'' पुजारी ने बताया, ''जी हाँ, देव मूर्तियों को नित्य भोग लगाया जाता है।'' पुजारी ने कई अच्छे-अच्छे पदार्थ गिनते हुए कहा कि इन-इन पदार्थो का भोग लगाया जाता है। पण्डित जी ने वराह की ओर ईशारा करते हुए कहा, ''इस वराह (सूअर) को किस पदार्थ का भोग लगाते हो?'' इस प्रश्न को सुनकर पुजारी बड़ा लज्जित हुआ कि अब क्या कहे और क्या न कहे? वराह अवतार के प्रिय भोजन (विष्ठा) को तो कोई मनुष्य देखना व छूना भी ठीक नहीं समझता।

जुलाई 1890 में पं. जी जलालपुर भटियां (गुजरां वाला) गये। वहाँ शास्त्रार्थ करने के लिए पौराणिकों ने एक पत्र लिखा। पौराणिक पं. श्री प्रीतम देव जी ने मूर्ति पूजा के पक्ष को सिद्ध करने के लिए यजुर्वेद 32/3 का यह मन्त्र रखा-

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हिं/सीदित्येषा
यस्मान्नजात इत्येषः।।

- ❑ क्षुधा और प्यास से जितनों की मृत्यु होती है उनसे कहीं अधिक लोगों की मृत्यु अधिक भोजन और मदिरा सेवन से होती है। **- कहावत**
- ❑ मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो और आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। **-अरस्तु**
- ❑ मुस्कान पाने वाला मालमाल हो जाता है, परन्तु देने वाला दरिद्र नहीं होता। **-अज्ञात**
- ❑ इंसान अगर लालच को ठुकरा दे तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले। **-शेखसादी**

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना क्यों की?

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज एक सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन है। यह वैदिक सिद्धान्तों से देश की राजनीति को भी दिशा देने में समर्थ है। वेद, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में राजा के कर्तव्यों सहित समाज एवं देश की सुव्यवस्था संबंधी वैदिक विधानों की भी चर्चा है। आर्यसमाज की सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बिन्दु व प्रेरणा स्रोत वेद है। वेद क्या हैं? वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की प्रेरणा से चार आदि ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया गया ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने उन चार ऋषियों के निजी उपयोग के लिए ही नहीं अपितु उन्हें अन्य सभी मनुष्यों का प्रतिनिधि बनाकर दिया था जिससे वह सभी लोगों को वेदों का ज्ञान करा सकें और उन्होंने ऐसा किया भी। वेद और धर्म दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। वेद की सभी शिक्षायें सत्य है और सभी मनुष्यों को इसका पालन करना अपनी ऐहिक व पारलौकिक उन्नति के लिए आवश्यक है। वेदों की शिक्षाओं का पालन ही धर्म कहा जाता है। वेदों में सत्य का व्यवहार करने व परहित के कार्यों में जीवन व्यतीत करने की आज्ञा है। यही मनुष्य का धर्म भी है।

वेद मनुष्यों में भौगोलिक कारणों, रंग–रूप व अन्य किसी प्रकार से भी भेद नहीं करता। उसके लिए सभी मनुष्य काले, गोरे, अगड़े व पिछडे, स्त्री व पुरुष समान हैं। सबको समान रूप से ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदाध्ययन, वेदाचरण व अन्य सभी अधिकार अपनी अपनी गुण, कर्म, स्वभाव व योग्यता के अनुसार प्राप्त हैं। महाभारतयुद्ध के बाद वेदों का यथार्थ ज्ञान अप्रचलित होकर विलुप्त प्रायः हो गया था। इस कारण देश व संसार में अंधकार फैला और अनेक मत–मतान्तर उत्पन्न हुए जो अधिकांशतः अविद्या से ग्रस्त थे। आज संसार में जितने भी मत प्रचलित हैं उनमे वेद व सनातनी पौराणिक मत के अतिरिक्त मुख्यतः ईसाई व इस्लाम मत का प्रचार प्रसार अधिक है। ईसाई व इस्लाम मत से पूर्व बौद्ध व जैन मत भी प्रचलन में आये और आज भी इनका अस्तित्व व प्रचार है। बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम आदि मत इन मतो से 1.96 अरब वर्ष पूर्व आरम्भ व प्रचलित वेद धर्म से प्रेरणा व सहायता नहीं लेते। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जब इन मतों की स्थापना व आरम्भ हुआ, उस समय यरुशलम, मक्का मदीना आदि स्थानों पर वेदों का प्रचार व जानकारी लोगों को नहीं थी। ऐसा न होने पर भी वेदों की बहुत सी शिक्षायें इन मतों में पाई

जाती हैं। बौद्ध और जैन नास्तिक मत यद्यपि लगभग 2500 वर्ष पूर्व भारत में अस्तित्व में आये परन्तु उनके समय वेदों के नाम पर यज्ञों में जो पशु हिंसा प्रचलित थी, उनका इन मतों ने विरोध किया। इस विरोध के कारण ही यह भी वेदों से प्रेरणा नहीं लेते। यह बात अन्य है कि वेदों के आधार पर प्रचिलत मोक्ष आदि शब्द इन्होंने वैदिक परम्परा से ही लिये हैं। इन सभी मतों से पूर्व व महाभारत काल के बाद वेदों की कुछ सत्य व कुछ असत्य मान्यताओं पर आधारित सनातन धर्म प्रचलित हुआ जो शुद्ध वैदिक धर्म से कुछ कुछ विकृत मत था। बाद में पुराण आदि की रचना होने से इसमें और अनेक वेदविरुद्ध बातें प्रचलित हुईं।

समय व्यतीत होने के साथ सनातनी पौराणिक मत में अनेक अज्ञान की बातें, अन्धविश्वास एवं कुरीतियां आदि उत्पन्न हो गई। इनके परिणाम से ही इस मत के अनुयायी अवैदिक मान्यताओं व परम्पराओं अवतारवाद, बहुदेवतावाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिवाद आदि को मानने लगे जो वर्तमान में भी विद्यमान हैं। महाभारत काल से पूर्व गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी जिसका विकृत रूप जन्मना जातिवाद अस्तित्व में आया। इस जन्मना जातिवाद व वर्णव्यवस्था के विकृत रूप ने समाज में अव्यवस्था को जन्म दिया जिससे समाज व देश कमजोर हुआ और यवनों व मुस्लिमों का गुलाम भी हुआ। इस गुलामी में मुख्य कारण मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, धार्मिक अन्धविश्वास, मिथ्या व अज्ञानपूर्ण परम्परायें ही मुख्य थीं। ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में भारत अधिकांशतः अंग्रेजी राज्य बन चुका था। ऐसे समय उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देश के धार्मिक व सामाजिक जगत में वेद विद्या से देदीप्यमान महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। महर्षि दयानन्द दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा के सुयोग्य शिष्य थे। गुरु ने उन्हें देश व समाज से अज्ञान दूर कर वेद मत स्थापित करने की प्रेरणा दी थी। इस परामर्श को महर्षि दयानन्द जी ने स्वीकार किया था और सन् 1863 में मथुरा से आगरा आकर धर्म प्रचार का कार्य करना आरम्भ कर दिया था। आगरा में रहते हुए वह पौराणिक मान्यताओं का खण्डन करते थे। उन्होंने वहां रहते हुए सन्ध्या नाम की एक लघु पुस्तक लिख कर उसे प्रकाशित कराया और उसका वितरण कराया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने सार्वजनिक जीवन में वेद और आर्ष साहित्य के आधार पर निश्चित सत्य मान्यताओं के प्रचार व प्रसार को अपना लक्ष्य बनाया था और वेद विरुद्ध मान्यताओं व विचारों का वह युक्ति, तर्क व वेद प्रमाणों से खण्डन भी करते थे।

आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने मुम्बई नगरी में 10 अप्रैल, सन् 1875 को की थी। इसके लिए उन्हें मुम्बई के प्रमुख आर्य पुरुषों ने प्रेरित किया था। ऋषि ने भी समाज की स्थापना पर अपनी सम्मति दी थी और वहां के सत्पुरुषों को सावधान भी किया था कि आर्यसमाज का संचालन विधि विधान के अनुसार योग्य पुरुषों द्वारा होना चाहिये। यदि इसमें व्यवधान हुआ तो परोपकार के इस कार्य से वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा जिसके लिए यह समाज स्थापित किया जा रहा है। आर्यसमाज का उद्देश्य वही था जो ऋषि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने उन्हें प्रेरित किया था एवं ऋषि भी उस पर पूर्णरूपेण आश्वस्त थे। वह उद्देश्य यही था कि वेदों के प्रचार से समाज व विश्व से अज्ञान, असत्य व अविद्या को मिटाया जाये और उसके स्थान पर सत्य व विद्या से पूर्ण वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज, देश व विश्व को बनाया जाये। अविद्या जब दूर होती है तो मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित सभी कार्य पूर्ण ज्ञानपूर्वक करता है जिसमें कहीं किंचित अज्ञान व अन्धविश्वास की सम्भावना नहीं रहती। यदि सभी व अधिकांश मनुष्यों की अविद्या दूर हो जाये तो समाज व देश सुख का धाम बन सकता है। इसी कारण वेद विश्व को श्रेष्ठ वा आर्य बनाने का उद्घोष करते हैं।

आज संसार में अविद्या व्याप्त है। अविद्या इस कारण कि संसार के 90–95 प्रतिशत लोग वेद ज्ञान से अपरिचित होने के साथ ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप को नहीं जानते और न ही उन्हें कर्मफल व्यवस्था का ज्ञान है, न पुनर्जन्म के सिद्धान्त का और न ही जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का पता है। वह यह भी नहीं जानते कि वह प्रतिदिन जो कर्म करते हैं उसका परिणाम उनके इस जीवन व मृत्यु के बाद क्या होगा? इन सब प्रश्नों के यथार्थ उत्तर देने और लोगों को असत्य मार्ग से हटाकर सत्य पर आरूढ़ करने के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज अन्य संस्थाओं की भांति कोई संस्था नहीं अपितु यह तो एक वेदप्रचार आन्दोलन है। एक ऐसा आन्दोलन जो इतिहास में पहले कभी किसी ने किया नहीं और न आर्यसमाज के अलावा किसी में करने की सामर्थ्य है। यह अविद्या वेदों के अध्ययन, स्वाध्याय व वेदाचार्यों के उपदेश से ही दूर हो सकती है। यही कार्य व इसका प्रचार आर्यसमाज करता है। आर्यसमाज ने अतीत में वेद प्रचार सहित सामाजिक सुधार व देशोन्नति के अनेक कार्य किये हैं। शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी आर्यसमाज की अग्रणीय भूमिका है। सभी मत–मतान्तरों की अविद्या से भी आर्यसमाज ने सामान्यजनों को परिचित कराया है। लोगों को सच्ची ईश्वरोपासना एवं अग्निहोत्रादि करना सिखाया है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद वा प्रचलित जन्मना वर्णव्यवस्था, बालविवाह, सतीप्रथा आदि का आर्यसमाज विरोध करता रहा है और इन कार्यों में कहीं आंशिक तो कहीं अधिक सफलता भी आर्यसमाज को मिली है। छुआछूत आदि का भी आर्यसमाज विरोधी रहा है और आर्यसमाज के प्रचार से यह प्रथा भी कमजोर पड़ी है। आर्यसमाज ने आजादी के आन्दोलन में अनेक देशभक्त क्रान्तिकारी नेता व आन्दोलनकारी देश को दिये हैं। पं श्यामजीकृष्णवर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद भगत सिंह आदि ऋषि दयानन्द के साक्षात अनुयायी, शिष्य व उनके परिवारों से ही थे।

ऋषि दयानन्द देश को अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वासों से पूर्णतया मुक्त करना चाहते थे। ऐसा होने पर ही यह देश संगठित होकर विश्व की महान अजेय शक्ति बन सकता था। देश की आजादी के बाद देश में जिन नीतियों का अनुसरण किया गया उसके परिणाम से देश दिन प्रतिदिन अविद्या में फंसता जा रहा है और धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से कमजोर हो रहा है। आज पहले से कहीं अधिक वेद प्रचार की आवश्यकता है परन्तु आज जिस प्रकार के योग्य प्रचारक विद्वानों व कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है उस कोटि के समर्पित भावना वाले विद्वान, प्रचारक व कार्यकर्ता हमारे पास या तो हैं नहींया बहुत ही कम हैं। वर्तमान में जिससे जितना भी हो सके उसे ऋषि के वेद प्रचार कार्य को तीव्र गति प्रदान करनी है। ईश्वर की कृपा होगी तो वेद प्रचार का कार्य गति पकड़ेगा और सफल भी होगा। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के वेद प्रचार के उद्देश्य, अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि तथा इसके साथ ही सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग का जो आन्दोलन किया था उसे हम जारी रखें और गति प्रदान करें। ईश्वर इस कार्य को सफलता प्रदान करें।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001,
फोन:09412985121

वह इतिहास बना गया

लेखराम बलिदानी योद्धा,
जीवन भेंट चढ़ा गया।
तन मन धन सर्वस्व लुटाकर,
ऊँचे कर्म कमा गया।।
देश धर्म का दीवाना,
वह नरनामी नरनायक था।
दीन दुखी का सेवक था,
दलितों का वीर सहायक था।।
परहित जीवन भेंट चढ़ाकर,
वीर गति को पा गया।।
मरने का डर वह क्या जाने,
वह ईश्वर विश्वासी था।
राम कृष्ण का वंशज प्यारा,
सच्चा भारतवासी था।।
जन्म मरण के भेद मुसाफिर
सारे हमें बता गया....
छुरियों और कटारों से,
वह अंगारों से खेला था।
वीर शहीद निराला मानस,
बलिदानी अलबेला था।।
ढोंग-ढांग के तर्क तोप से,
सारे किले गिरा गया....
जाति हित में 'लेखराम' ने,
क्या कुछ नहीं लुटाया है।
रच कर ग्रन्थ अनूठे उसने,
वैदिक नाद बजाया है।।
जीवन लिखते अमर ऋषि का,
आप अमर पद पा गया....
'जिज्ञासु' वह नामी ज्ञानी,
परम तपस्वी वेदाभिमानी।
हर संकट में नर नाहर ने,
डटकर अपनी छाती तानी।।
गर्व करें हम जिस पर ऐसा,
वह इतिहास बना गया।
लेखराम बलिदानी योद्धा
जीवन भेंट चढ़ा गया।।

– राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 196वां जन्मोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 196वां जन्मोत्सव दिनांक 18 फरवरी 2020 को समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ 11 कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से हुआ। ''आर्य जगत के वैदिक युवा विद्वान् एवं ओजस्वी प्रवक्ता आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा महर्षि दयानन्द जी भारत के उन सिद्ध ओर उच्च आत्माओं में से जिसका नाम संसार के इतिहास में विशेष तथा भारत के इतिहास में हमेशा के लिए चमकते हुये सितारे की तरह प्रकाशित रहेगा। स्वदेश तथा स्वभाषा के लिए नारी जाति के लिए, भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिए, 19वीं शताब्दी कि सबसे बड़ी उपलब्धी स्वामी दयानन्द ने वेदों को पुर्नबलित किया। श्री अरविन्द शास्त्री एवं विजय व्यास शास्त्री जी यज्ञ सम्पन्न कराया। युवा संगीतकार श्री संदीप आर्य जी ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन सभा प्रधान लक्ष्मण पाहूजा जी ने किया।

– नरेन्द्र तनेजा, मन्त्री

आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा वेद प्रवचन एवं बौद्धोत्सव मनाया गया

संचालित आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर राजेन्द्र नगर) सप्तदिवसीय वेद प्रवचन एवं बौद्धोत्सव मनाया गया। प्रतिदिन वेद मन्त्रों के द्वारा यज्ञ किया गया, यज्ञ के ब्रह्मा ''आचार्य गवेन्द्र शास्त्री एवं अनिल शास्त्री जी द्वारा सम्पन्न हुआ। संगीत श्रीमती अमृता आर्या एवं मुकेश आर्य के हुए। वेद प्रवचन आचार्य राजु वैज्ञानिक जी एवं आचार्य गवेन्द्र जी के सारग्रभित प्रवचन हुए। कार्यक्रम का संचालन अमृता आर्या जी ने किया।

– जनक चुघ, मन्त्राणी

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री धूमसिंह शास्त्री जी के पिता (श्री धीरेन्द्र सिंह का निधन)
2. स्वामी सम्पूर्णानन्द जी की माता श्रीमती चमेली देवी का निधन
3. डॉ. बृजेश गौतम जी के ताया (स्वतन्त्रता सेनानी श्री रोशन लाल गौतम जी का निधन)
4. श्री प्रहलाद सिं आर्य के पिता (श्री जयपाल सिंह आर्य का निधन
5. ब्रह्मचारी नन्द किशोर जी का निधन।

माह-फरवरी 2020 के आर्थिक सहयोगी

1.	डॉ. कँवल कालरा जी, खन्दारी रोड, आगरा	3000/-
2.	श्री गौरव आर्य जी, गुड़गांव	2100/-
3.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ए, फरीदाबाद	1000/-मासिक
4.	आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	1000/- मासिक
5.	आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	800/- मासिक
6.	आर्य अरविन्द जी, टीला शहवाजपुर लोनी, गाजियाबाद	500/- आजीवन शुल्क
7.	श्री विजय पाल आर्य जी, जावली, गाजियाबाद	500/- दान
8.	श्रीमती उमा बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
9.	मा. चुन्नीलाल आर्य जी, लम्बेड़ी, नौशहरा, जिला-राजौरी गार्डन	500/-आजीवन शुल्क
10.	आर्य समाज किरण गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली	500/-
11.	श्री सुदर्शन कपूर जी, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	200/-
12.	श्री शिव कुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	200/-
13.	श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	100/-

75वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ

श्री भर्तहरि वानप्रस्थी जी द्वारा स्थापित श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्री राम कृष्ण गौशाला खेड़ा खुर्द दिल्ली-110082, हीरक जयंती **75वें वार्षिकोत्सव** के शुभ अवसर पर **यजुर्वेद पारायण यज्ञ राष्ट्र-रक्षा व गौरक्षा सम्मेलन रविवार 15 मार्च 2020** समादरणीय महानुभावों इस शुभ अवसर पर आप सभी सज्जन इष्ट मित्रों के साथ सपरिवार सादर आमन्त्रित है। विद्वानों एवं सन्तों महात्माओं के प्रवचनों से ज्ञान व सुख-शान्ति प्राप्त करने हेतु पधार कर लाभान्वित हो।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ-प्रात: 7:00 बजे से 8:00 बजे तक, सायं 6:00 से 7:00 तक।

कार्यक्रम:- यज्ञ-प्रात: 8:00 से 9:30 तक, **ध्वजारोहण**-प्रात: 9:30, **जलपान**-प्रात: 9:45 से 10:15 तक, **राष्ट्र रक्षा एवं गौरक्षा सम्मेलन**- 10:15 से 1:30 तक, **ऋषि लंगर**-दोपहर 1:30

निवेदक:- आर्य ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान, **आचार्य सुधांशु**, प्राचार्य

आर्य समाज किदवई नगर द्वारा यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज किदवई नगर में यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन आचार्य ओमप्रकाश यजुर्वेदी ने करवाया इस अवसर पर राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व विषय पर डॉ. पूर्ण सिंह डबास ने अपने उत्साह पूर्ण उद्‌बोधान मे कहा कि स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छन्दता कदापि नही है हम आजाद है तो आजाद भारत के लिए हमारे कुछ दायित्व भी है एक बार कोई भी कानून देश की सर्वोच्च पंचायत संसद मे पारित हो गया तो उसके विरुद्ध सम्प्रदायवाद का जहर घोलकर आन्दोलन करना अराजकता है शान्ति की स्थापना क्रान्ति के बिना नही होती मुक्ति का पथ ढूँढने के लिए शान्ति व सदभाव चाहिए बन्धुत्व की इस भावना का प्रसार आप्त ग्रन्थों के प्रसार से होगा उस शास्त्र की रक्षा के लिए भी शस्त्र चाहिए। संस्कृति और सभ्यता दोनों अलग अलग हैं सभ्यता बाहर की ओर संस्कृति अन्दर की चीज है इसी प्रकार देश और राष्ट्र अलग अलग अस्तित्व वाले है कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत उदय परिषद के अध्यक्ष आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने की। इस अवसर पर श्री राकेश भटनागर, महामन्त्री, श्री प्रकाश वीर आदि आर्य जन उपस्थित थे। यह समारोह श्री चतर सिंह नागर के सानिध्य मे किया गया। व्यास देव शास्ती ने सब का धन्यवाद किया।

- अनुराग मिश्र

रक्षामन्त्री राजनाथ ने किया 'सिन्धु से हिन्दू और इंडिया' शोध ग्रन्थ का विमोचन

रक्षामन्त्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली स्थित अपने निवास पर सुप्रसिद्ध लेखक एवं शिक्षाविद् डॉ. पूर्ण सिंह डबास के शोध ग्रंथ 'सिन्धु से हिन्दू और इंडिया' का विमोचन किया। इस अवसर पर राजनाथ सिंह ने कहा कि डॉ. डबास की यह रचना कई मायनों में महत्वपूर्ण है। श्रम और खोज के मिश्रण से डॉ. पूर्ण सिंह डबास ने एक शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखा है इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। यह पुस्तक अनन्य प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)

दूरभाष:- 91-9814629410

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना

सत्र 2020-2021

छठी कक्षा में (आयु+9 से 11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रूपये) भरकर 31.03.2020 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- ❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 05 अप्रैल 2020 दिन रविवार को प्रात: 8:00 बजे होगी।
- ❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- मोहन लाल कालड़ा, मैनेजर

प्रवेश प्रारम्भ

आप सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा खुर्द, नई दिल्ली में कक्षा छठी, सातवीं और आठवीं में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। शिक्षा, भोजन, आवास, दूध, वस्त्र, पुस्तक कॉपी आदि का किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। प्रवेश के इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

आचार्य सुधाशु

मो. 8800442618, 9811142526

आर्य समाज द्वारा सम्मान

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वानों को गत 9 फरवरी 2020 को शान्ति, समृद्धि, के लिए सम्मान दिया गया। 11 कुण्डीय वृहद् यज्ञ के रजत जयन्ती समारोह पर वैदिक विद्वानों आचार्य भगवानदेव, आचार्य हरेन्द्र शास्त्री, डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री को ''आर्य रत्न वैदिक शिक्षा सम्मान'' भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इन वैदिक विद्वानों को यह सम्मान आर्य समाज, वैदिक संस्कृति, समाज सेवा एवं वैदिक शिक्षा प्रचार-प्रसार में निरन्तर योगदान के लिए प्रदान किया गया। इन्होंने जिस सत्य निष्ठा, तप त्याग और तपस्या से जो सेवा की है, वह सभी आर्य जनों एवं समाज के लिएआदर्श एवं प्रेरणा प्रद है। यह सम्मान श्री द्वारिका नाथ सहगल बौद्धिक विकास आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली सम्मान समिति की तरफ से भव्य प्रशस्ति पत्र, शाल तथा नकद राशि देकर किया गया। इस अवसर पर विद्वान् आचार्यो ने अपना उद्‌बोधन देकर सभी श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। विद्वान् आचार्यो ने श्री अशोक सहगल जी को समाज के दायित्वों को दायित्व पूर्ण तरीके से निभाने एवं कुशलता से कार्य करने के लिए विशेष आशीर्वाद एवं बधाई दी।

- अशोक सहगल, प्रधान

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-03-2020

Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-2
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

मार्च-2020

रिश्तों में प्रगाढ़ता लाता है-होली का पर्व

भारतीय पर्व-परम्परा में होली आनन्दोल्लास का सर्वश्रेष्ठ रसोत्सव है। मुक्त स्वच्छन्द परिहास का त्यौहार है। नाचने, गाने, हँसी, ठिठोली और मौज-मस्ती की त्रिवेणी है। सुप्त मन की कन्दराओं में पड़े ईर्ष्या-द्वेष, राग-विराग जैसे निम्न विचारों को निकाल फेंकने का सुन्दर अवसर है। होली वसन्त ऋतु का यौवनकाल है, गरमी के आगमन की सूचक है। वनश्री के साथ-साथ खेतों की श्री एवं हमारे तन-मन की श्री भी फाल्गुन के ढलते-ढलते सम्पूर्ण आभा में खिल उठती है।

वसन्त में सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में आ जाता है। फल-फूलों की नई सृष्टि के साथ ऋतु भी अमृतप्राण हो जाती है। इसलिए होली के पर्व को मन्वन्तरारम्भ भी कहा गया है।

भारत कृषि-प्रधान देश है। होली के अवसर पर पकी हुई फसल काटी जाती है। खेत की लक्ष्मी जब घर में आती हैं तो किसान अपने सुनहरे सपने को साकार पाता है। वह आत्मविभोर होकर नाचता गाता है। अग्नि देवता को नवान्न की आहुति देता है। फाल्गुन पूर्णिमा होलिका दहन का दिन है। लोग घरों से लकड़ियाँ इकट्ठी करते हैं। अपने-अपने मोहल्ले में अलग-अलग होली जलाते हैं। होली के चारों ओर लोग नाचते और गाते हैं।

होली के साथ अनेक दन्तकथाओं का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। होलिका दहन क्यों किया जाता है? इसके लिए कुछ पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। पहली कथा है प्रह्लाद और होलिका की। प्रह्लाद के पिता हिरण्यकशिपु नास्तिक थे, ईश्वर को नहीं मानते थे। और वे नहीं चाहते थे कि उनके राज्य में कोई ईश्वर-पूजा करे। किन्तु स्वयं उनका पुत्र ईश्वर का परम भक्त था। अनेक कष्टों के बाद भी जब उसने ईश्वर-भक्ति नहीं छोड़ी, तब उसके पिता ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद के साथ आग में बैठने को कहा। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह अग्नि में नहीं जलेगी। अग्नि में होलिका प्रह्लाद को लेकर बैठी। परिणाम उलटा हुआ। होलिका अग्नि में जलकर भस्म हो गई और प्रह्लाद सुरक्षित बाहर आ गया।

होली से अगला दिन धुरड्डी का है। फाल्गुन की पूर्णिमा के चन्द्रमा की ज्योत्स्ना, वसंत की मुस्कुराहट, परागी फगुनाहट, (फगुराओं) फाग खेलने वालों की मौज-मस्ती, हँसी-ठिठौली, मौसम की बजाती धुरड्डी आती है। रंग भरी होली जीवन की रंगीनी प्रकट करती है। होलिकोत्सव के मधुर मिलन पर मुँह को काला-पीला करने का जो उल्लास होता है, रंग की भरी बाल्टी एक-दूसरे पर फेंकने की जो उमंग होती है वे सब जीवन की सजीवता प्रकट करते हैं। वास्तव में होली का त्यौहार व्यक्ति के तन को ही नहीं अपितु मन को भी प्रेम और उमंग से रंग देता है। तन के साथ-साथ मन भी सौहार्द की आर्द्रता से भीग जाता है।

होली का सम्बन्ध हास्य से भी जोड़ा जाता है। हल्के-फुल्के व्यंग्यों की बौछार होंठों पर मुस्कान ला देती है। यही तो पर्व की सार्थकता है। गाँवों में रात देर तक फाग गाये जाते हैं। बैठक जमती है। एक दूसरे के संग मिलकर एकाकार होकर सुखमय स्मृतियों को स्मरण करना यही फाग का उद्देश्य होता है। होली एक त्यौहार ही नहीं अपितु एक ऐसा पर्व बन जाता है जो अमीर-गरीब, सुन्दर-कुरूप, काला-गोरा सभी पर एक ही रंग का आवरण डालकर एकात्मकता का प्रतीक बन जाता है।

होली पर्व आपसी भाई-चारे में अति प्रगाढ़ता को बढ़ा देता है। इससे समस्त आपसी रिश्ते अत्यधिक गहरे रूप ले लेते हैं। जीवन का नयापन आरम्भ होने लगता है। गाँवों, शहरों में जो आयोजन होता है उसका मात्र उद्देश्य होता है सांस्कृतिक संगठन द्वारा एकता को बनाये रखना। जिससे भारतीय संस्कृति में परम्परा का स्थायित्व बना रहे।

– राजेश्वर मिश्र

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिरला लाईन, कमला नगर, दिल्ली-07
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	नरेन्द्र मोहन वलेचा
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	ई-187, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060
4. सम्पादक का नाम	:	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो : समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।		भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

मैं नरेन्द्र मोहन वलेचा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 01.3.2020

नरेन्द्र मोहन वलेचा, प्रकाशक

मुद्रक व प्रकाशक-नरेन्द्र मोहन वलेचा द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, मो.: 8368008215, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री